नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

इंटरनेट पर सुप्रीम कोर्ट का महत्वपूर्ण फैसला

डिजिटल युग में इंटरनेट केवल तकनीक का माध्यम नहीं रहा. यह आज अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा मंच है, व्यापार का आधार है, और लोकतांत्रिक भागीदारी का सशक्त उपकरण भी. ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के हालिया निर्णय इंटरनेट नियंत्रण को लेकर एक नए संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं. ये फैसला न केवल सरकारों को सीमाओं का स्मरण कराता है, बल्कि नागरिकों और डिजिटल प्लेटफॉर्मों को भी उनकी जिम्मेदारी का अहसास कराते हैं.

सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि सर्वोच्च न्यायालय ने इंटरनेट को संविधान प्रदत्त स्वतंत्रता के विस्तार के रूप में स्वीकार किया है. कोर्ट ने दो-टूक शब्दों में कहा कि इंटरनेट का उपयोग अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और 19(1)(जी) के तहत व्यवसाय के अधिकार से गहराई से जुड़ा है. यह बात अपने आप में सरकारी निर्णयों पर एक संवैधानिक लगाम है, क्योंकि अब कोई भी प्रशासनिक तंत्र मनमाने ढंग से या अनिश्चितकाल के लिए इंटरनेट बंद नहीं कर सकता. कोर्ट का जोर 'आवश्यकता' और 'आनुपातिकता' पर है. यदि सरकार इंटरनेट बंद करती है, तो उसे ठोस और तर्कसंगत कारण बताने होंगे, और प्रतिबंध की अवधि वही होगी जो स्थिति की गंभीरता के हिसाब से उचित हो. यह सिद्धांत डिजिटल युग में राज्यसत्ता और नागरिक अधिकारों के बीच नए सामाजिक अनुबंध को रेखांकित करता है. लेकिन इंटरनेट केवल अधिकारों का विषय नहीं है. यह अनियंत्रित क्षेत्र भी नहीं हो सकता. यहीं सुप्रीम कोर्ट ने हाल के निर्णयों में डिजिटल स्पेस की सबसे बड़ी चुनौती, ऑनलाइन सामग्री के विनियमन, पर ध्यान केंद्रित किया है. बच्चों की सुरक्षा को लेकर कोर्ट की चिंता जायज़ और समयानुकूल है.

इंटरनेट पर अश्लील या हानिकारक सामग्री की बाढ़ के बीच, अदालत ने सरकार को उम्र सत्यापन जैसे कठोर लेकिन आवश्यक उपायों पर विचार करने को कहा है. यह केवल नैतिकता का प्रश्न नहीं, बल्कि संवैधानिक संरक्षण के दायरे में आने वाला मुद्दा है. साथ ही, उपयोगकर्ता-जनित सामग्री के अराजक महासागर में फेक न्यूज, नफरत और हिंसा को रोकने के लिए अदालत ने एक स्वायत्त नियामक संस्था की आवश्यकता जताई है. यह सुझाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि डिजिटल कंपनियों पर स्वयं नियमन छोड़ देने से समस्या और गहराई है, वहीं सरकारी नियंत्रण बढ़ाने का जोखिम भी लोकतांत्रिक अधिकारों को प्रभावित कर सकता है. एक स्वतंत्र नियामक इस संतुलन को साधने का रास्ता खोल सकता है. इसके समानांतर, साइबर फ्रॉड, विशेषकर 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे अपराधों पर सुप्रीम कोर्ट का रुख बेहद सख्त है. आम लोगों को ऑनलाइन ठगी और धमकियों से बचाने के लिए अदालत ने निचली अदालतों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि गंभीर मामलों में अभियुक्तों को आसानी से राहत न मिले.

अदालत ने केंद्र से सख्त कानूनी ढांचा तैयार करने को कहा है, ताकि यह तेजी से फैलता 'डिजिटल जुआ बाजार' देश की वित्तीय प्रणाली और सुरक्षा के लिए खतरा न बने. कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट का संदेश साफ है कि इंटरनेट मौलिक है, लेकिन अनियंत्रित नहीं. यह न तो सरकारों के मनमाने निर्णय का उपकरण बन सकता है और न ही अपराधियों और अनैतिक तत्वों का खेल का मैदान. अदालत ने लोकतंत्र के डिजिटल विस्तार के साथ डिजिटल अनुशासन की भी रूपरेखा तय की है. अब जिम्मेदारी सरकार की है कि वह संतुलित कानून बनाए, प्लेटफॉर्म की है कि वे जवाबदेही स्वीकार करें, और नागरिकों की है कि वे डिजिटल स्वतंत्रता के साथ डिजिटल सजगता भी अपनाएं. डिजिटल भारत का भविष्य इसी त्रिकोणीय जिम्मेदारी पर टिका है.

मध्य क्षेत्र की डायरी

प्रदेश में कानून व्यवस्था पर उठ रहे हैं सवाल

दिलीप झा

प्रदेश में कानून-व्यवस्था को लेकर सवाल उठ रहे हैं तो यह गंभीर मसला। डीजीपी के निर्देश के बाद भी प्रदेश के शहरों के प्रमुख चौक-चौराहों पर पुलिस दिखती नहीं है। इसमें कोई दो राय नहीं कि पुलिस के सड़क पर दिखने से बदमाशों अथवा असामाजिक तत्वों में खौफ रहता है और वे आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देने से डरते हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अपराधियों में पुलिस का खौफ नहीं है। क्योंकि न हत्या रुक रही है और न ही लूटपाट। शुक्रवार को भी महू में दस लाख की लूट हो गई।

पिछले शनिवार की रात भोपाल के ग्रीन पार्क कॉलोनी में बदमाशों ने पत्थरों और डंडों से हमला कर आसपास खड़े दर्जनों वाहनों में तोड़फोड़ कर दी। हैरानी इस बात की है कि बदमाशों का लाइव वीडियो जब सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, तब जाकर पुलिस की नींद खुली। इस घटना के तीन दिन बाद फिर बदमाशों ने गौतमनगर थाना क्षेत्र में वाहनों को तोड़फोड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया। इस बार बदमाश सोशल मीडिया पर लाइव आकर पुलिस को खुलेआम चुनौती दे डाली कि पहले पकड़ के दिखाओ, फिर बताएंगे किसने तोड़फोड़ की। अपराधी अगर पुलिस को चुनौतियां पेश करने लगे तो यह समझा जाता है कि पुलिस का इकबाल कमजोर हो रहा है। पुलिस की यह छवि किसी भी राज्य के लिए अच्छा संकेत नहीं माना जाता है। शासन के लिए लॉ एंड ऑर्डर एक बड़ा मसला है और इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। इसमें दो राय नहीं है कि नागरिक सुरक्षा की दायित्वों का निर्वहन पुलिस पर है लेकिन जब उनकी कार्यप्रणाली में हस्तक्षेप कर अपनी राजनीति करने वाले हमारे माननीय अपनी मनमानी करने लगते हैं तो ईमानदारी से कर्त्तव्य करने वाले पुलिस अधिकारियों का मनोबल गिरने लगता है।

सूत्र यह भी बताते हैं कि प्रदेश में पुलिस प्रशासन में पारदर्शिता की भारी कमी है और यहां हो रहे भेदभाव से भी पुलिस कर्मियों का मनोबल टूट रहा है। इसलिए वे प्रसन्नचित्त भाव से काम करने में असमर्थ महसूस कर रहे हैं। बुधवार रात्रि 8.15 बजे अचानक मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव पहुंचे और डीजीपी को निर्देश दिए कि कानून व्यवस्था को बनाए रखना सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। असामाजिक तत्वों से सख्ती से निपटने के निर्देश दिए। वहीं, देर रात भोपाल के पुलिस कमिश्नर हरिनारायणचारी मिश्र ने हबीबगंज, टीटीनगर और शाहपुरा थाने का औचक निरीक्षण कर गुंडे बदमाशों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

भाजपा की अब पश्चिम बंगाल पर पैनी नजर

श्याम यादव

> बिहार चुनाव में मिली अप्रत्याशित जीत ने भाजपा को उत्साहित कर दिया. यही कारण है कि भाजपा का अगला कदम बंगाल में अपनी ताकत दिखाने के साथ सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस को उखाड़ने का होगा. इसके लिए भाजपा का पैतृक संगठन वहां पहले से ही सक्रिय हो चुका है. बिहार में मिली सफलता ने पार्टी को राजनीतिक ऊर्जा दी. नेतृत्व अब साफ मान रहा है कि पूर्वी भारत में पैठ बढ़ाए बिना राष्ट्रीय विस्तार की कहानी अधूरी रहेगी. ऐसे में पश्चिम बंगाल अगले बड़े राजनीतिक अभियान का स्वाभाविक केंद्र बन चुका है.

पश्चिम बंगाल में फिलहाल तृणमूल कांग्रेस की मजबूत सरकार है. 2021 के विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने 213 सीटों के साथ लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल की थी. भाजपा उस चुनाव में 77 सीटें जीतकर मुख्य विपक्ष बनी, जो उसके लिए राजनीतिक उपस्थिति का संकेत तो था, पर सत्ता की राह अभी भी लंबी और चुनौतीपूर्ण है. बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की पकड़ सिर्फ चुनावी जीत भर नहीं है, बल्कि सामाजिक योजनाओं, स्थानीय संगठन और ममता बनर्जी की व्यक्तिगत लोकप्रियता पर खड़ी एक लंबी राजनीतिक संरचना है.

लोकसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने अपनी स्थिति मजबूत रखी थी. जबकि, भाजपा ने कुछ नए क्षेत्रों में अपनी पकड़ दिखाई. भाजपा यह मानकर चल रही है कि यदि संगठनात्मक ढांचा सही समय पर तैयार हो जाए, तो लोकसभा की बढ़त को विधानसभा की सीटों में बदला जा सकता है. इसी कारण भाजपा के शीर्ष नेता, चुनावी रणनीतिकार और संगठन से जुड़े पदाधिकारी लगातार बंगाल का दौरा कर रहे हैं. जिलों में बैठकें, बूथ स्तर के पुनर्गठन और नए कार्यकर्ताओं को जोड़ने का अभियान नियमित गति से चल रहा है.

भाजपा का पैतृक संगठन आरएसएस इन दिनों बंगाल में सबसे सक्रिय दिखाई देता है. ग्रामीण इलाकों में शाखाओं की संख्या बढ़ी है, स्वयंसेवकों की नियमित गतिविधियाँ तेज हुई हैं और समाज के युवा व छात्र वर्ग तक पहुँचने के लिए नए कार्यक्रम शुरू किए गए हैं. यह भाजपा की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, जिसके तहत विचारधारा से जुड़ा आधार मजबूत किए बिना चुनावी सफलता स्थायी नहीं मानी जाती. वहीं तृणमूल कांग्रेस अपनी योजनाओं और नेतृत्व पर भरोसा बनाए हुए है. लक्ष्मी भंडार, कन्याश्री, रूपश्री, स्वास्थ्य साथी जैसी योजनाएं अब बंगाल की राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा बन चुकी हैं. इन योजनाओं का लाभ लेने वाले परिवारों का एक मजबूत आधार तृण मूल कांग्रेस के साथ खड़ा है. तृणमूल कांग्रेस का मानना है कि ममता बनर्जी की छवि, प्रशासनिक अनुभव और लाभार्थी वर्ग की स्थिरता उसे सत्ता विरोधी लहर से बचाती रही और आगे भी बचाएगी.

लेकिन चुनौतियाँ दोनों दलों के सामने हैं. तृण मूल कांग्रेस को सरकारी योजनाओं में कथित अनियमितताओं, स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार के आरोपों और संगठन के भीतर समय-समय पर उभरने वाली असंतुष्ट धारा से निपटना है. भाजपा इन मुद्दों को अपने अभियान का केंद्रीय हथियार बना कर चल रही है. आरोप और प्रत्यारोपों के बीच भ्रष्टाचार का मुद्दा बंगाल के चुनावों में भावनात्मक नहीं बल्कि व्यावहारिक असर डालने वाला माना जाता है, और भाजपा इसे भुनाना चाहती है. इस बीच चुनाव आयोग की ओर से चल रही एसआईआर प्रक्रिया ने राजनीतिक वातावरण गरमा दिया है. मतदाता सूची के इस विशेष पुनरीक्षण में नए नाम जोड़ने, पुराने हटाने और त्रुटियों को सुधारने का बड़ा अभियान चल रहा है. सामान्यत: यह तकनीकी प्रक्रिया है, लेकिन बंगाल में इसे सत्ता और विपक्ष दोनों ने राजनीतिक चश्मे से देखना शुरू कर दिया है.

भाजपा एसआईआर को चुनावी प्रक्रिया की शुद्धता से जोड़कर देख रही है. पार्टी का कहना है कि पिछले वर्षों में मतदाता सूची में कई विसंगतियाँ सामने आई थीं, जिन्हें हटाना जरूरी था. भाजपा को उम्मीद है कि नए नाम जुड़ने से उसके युवा वोट बैंक को बढ़त मिलेगी. दूसरी ओर, टीएमसी को आशंका है कि जल्दबाजी या अव्यवस्था के चलते उसके पारंपरिक वोटरों के नाम सूची से हट सकते हैं. कई जिलों में इस मुद्दे को लेकर राज्य सरकार और चुनाव आयोग के बीच खींचतान भी सामने आई है. 2026 में होने वाले विधानसभा चुनाव अब दोनों दलों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुके हैं. भाजपा के लिए यह सिर्फ सत्ता का अभियान नहीं, बल्कि बंगाल में अपना भविष्य सुरक्षित करने की लड़ाई है. पार्टी यह जानती है कि एक बार राज्य में सरकार बनाने के बाद संगठनात्मक मजबूत आधार स्वत: विकसित हो सकता है. दूसरी ओर, तृण मूल कांग्रेस के लिए यह चुनाव लगातार चौथी बार सत्ता में लौटकर अपनी राजनीतिक निरंतरता को फिर साबित करने का मौका है.

बंगाल के मतदाता का व्यवहार अक्सर अंतिम महीनों में तय होता है. यहाँ जातीय राजनीति उत्तर भारत की तुलना में कम प्रभावशाली है. बंगाल में प्रशासनिक संतोष, स्थानीय मुद्दों, नेतृत्व की विश्वसनीयता और सरकारी योजनाओं का प्रत्यक्ष असर ज्यादा महत्व रखता है.

भाजपा में गुटबाजी खत्म करने में जुटे खंडेलवाल

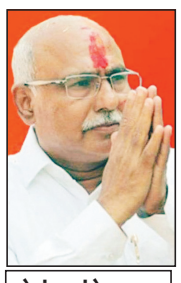
हेमंत खंडेलवाल

हेमंत खंडेलवाल बीजेपी अध्यक्ष बनने के बाद से पार्टी के अंदर चल रहे घमासान को रोकने कि लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। एक तो बीजेपी में भी गुटबाजी शुरू से है, लेकिन ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने चाहने वाले विधायकों के साथ कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में आ तो गए लेकिन पुराने बीजेपी के नेता उन्हें राज्य में अभी भी स्वीकार करने से हिचकते नजर आ रहे हैं। इसके कारण पार्टी अंदर से कमजोर होने लगी। जब यह रिपोर्ट दिल्ली हाईकमान तक पहुंची तो सांगठनिक स्तर पर पार्टी को मजबूत करने पर बल दिया गया। यही कारण है कि हेमंत खंडेलवाल आजकल बीजेपी के असंतुष्ट नेताओं से मुलाकात करने के लिए उनके घर जा रहे हैं। इस बीच गुरुवार को सांसद वीडी शर्मा ने गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की है और उन्हें प्रदेश के वर्तमान हालात से अवगत कराया है। राजनीतिक हलकों में इसके मायने भी निकाले जा रहे हैं। क्योंकि वीडी शर्मा, पूर्व गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा और आलोक शर्मा को भी पार्टी ने बिहार चुनाव में बड़ी जिम्मेदारी दी थी और उन्होंने जी-तोड़ मेहनत से वहां काम भी किया। बिहार के मिथिलांचल के कई सीटों पर जीत दिलाने में मध्यप्रदेश के इन नेताओं की भूमिका भी अहम है।

एसआईआर में रोड़ा अटकाने का बेमतलब प्रयास

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कांग्रेस पर सवाल उठाते हुए कहा कि एसआईआर कोई पहली बार नहीं हो रहा है। कोई प्रयास अगर राष्ट्रहित में हो रहा है तो उसका अनावश्यक विरोध अच्छी राजनीति नहीं कहीं जाती है। उन्होंने कांग्रेस से यह भी पूछा कि एसआईआर कराने वाले पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी क्या गलत थे। उन्होंने कहा कि एसआईआर पर चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट ने सही ठहराया है तो फिर जबरन विरोध का कोई मतलब नहीं होता है।

आईआईटी व हाईकोर्ट के नाम में बॉम्बे क्यों ?

पुराने फिल्मी गीतों में भी बॉम्बे या बंबई शब्द का उल्लेख रहा है जिसे कोई कैसे बदलेगा? देव आनंद अभिनीत फिल्म सीआईडी का गीत था- ऐ दिल है मुश्किल जीना यहां, जरा हटके, जरा बचके, ये है बॉम्बे मेरी जां! गोविंदा की एक फिल्म का गीत था- बम बम बम बम बंबई, बंबई हमको जम गई.

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि वह आईआईटी बॉम्बे का नामकरण आईआईटी मुंबई करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मानव संसाधन विकास मंत्री को पत्र लिखेंगे. हाल ही एक समारोह में केंद्रीय विज्ञान व तकनीक मंत्री तथा बीजेपी नेता डॉ. जितेंद्रसिंह ने मुंबई की बजाय बॉम्बे नाम का उपयोग करने का समर्थन किया. इस पर मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने मुख्यमंत्री का ध्यान आकर्षित किया और कहा कि सरकार की आंखों में मुंबई का नाम खटक रहा है. इस पर फडणवीस ने जवाब दिया कि बॉम्बे का नाम मुंबई करने के पीछे सबसे बड़ा योगदान बीजेपी नेता राम नाईक का रहा है. हम लोगों के लिए इस शहर का नाम मुंबई ही है. राज ठाकरे अपनी सुविधा के अनुसार राजनीति कर रहे हैं. राज ने खुद अपने बेटे अमित को बॉम्बे स्कॉटिश स्कूल में पढ़ाया था. उसने मराठी की बजाय जर्मन भाषा पढ़ी. वास्तव में मुंबई महापालिका चुनाव को देखते हुए नाम की राजनीति शुरू हो गई है. सिर्फ आईआईटी की बात नहीं है, बल्कि आज भी बॉम्बे हाईकोर्ट कहा जाता है. उसे मुंबई हाईकोर्ट या महाराष्ट्र हाईकोर्ट का नाम नहीं दिया जा सका. बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का नाम भी यथावत चला आ रहा है. इसके अलावा बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, बॉम्बे चेंबर ऑफ कॉमर्स तथा बॉम्बे जिमखाना का नाम लोग वैसा ही लेते हैं. पुराने फिल्मी गीतों में भी बॉम्बे या बंबई शब्द का उल्लेख रहा है जिसे कोई कैसे बदलेगा ? देव आनंद अभिनीत फिल्म सीआईडी का गीत था- ऐ दिल है मुश्किल जीना यहां, जरा हटके, जरा बचके, ये है बॉम्बे मेरी जां! गोविंदा की एक फिल्म का गीत था बम बम बम बम बंबई, बंबई हमको जम गई. जहां तक हाईकोर्ट का नाम है, अभी भी शहरों के नाम तो बदले हैं लेकिन उच्च न्यायालय का नाम वही है जैसे चेन्नई में मद्रास हाईकोर्ट है तथा कोलकाता में कलकत्ता हाईकोर्ट है.

निशानेबाज

कजाकिस्तान में अल्माटी चंदन और अबीर हमारी माटी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, जब राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों का दौर था तब देशभक्ति का गीत सुनाते हुए वीरेंद्र मिश्र ने गाया था- मेरे भारत की माटी चंदन और अबीर, सौ-सौ नमन करूं मैं भैया, सौ-सौ नमन करूं, महान जैन आचार्य विद्यासागर महाराज ने अमर कृति लिखी थी जिसका नाम था मूक माटी! राजकपूर को भी माटी से बहुत लगाव था. उनकी फिल्म 'कल, आज और कल' का गीत था- इक दिन बिक जाएगा माटी के मोल, जग में रह जाएंगे प्यारे तेरे बोल.'

हमने कहा, 'आज आप माटी की चर्चा क्यों कर रहे हैं? निकाय चुनाव पर बात कीजिए जिसमें कुछ उम्मीदवार मिट्टी के शेर के समान खड़े हो जाएंगे. आजकल जमीन से जुड़े नेता या माटी के लाल कम ही नजर आते हैं. मौका देखकर चौका मारने वाले महाविकास आघाड़ी के 46 नेता महायुति में शामिल हो गए. इनमें से 26 बीजेपी में, 13 अजीत पवार की राकांपा में और 7 शिंदे शिवसेना में चले

गए. चुनाव के समय यही होता है. गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राजनीति को छोड़कर माटी की महत्ता को समझिए, अपने देश की उपजाऊ माटी में तरह-तरह की फसलें पैदा होती हैं तो कजाकिस्तान में भी अल्माटी है. वहां नवभारत इंटरनेशनल बिजनेस एक्सीलेंस समिट का वैभवपूर्ण आयोजन हुआ. महाराष्ट्र की माटी की बैंकर, गायिका व समाजसेविका अमृता फडणवीस ने वहां अपने संबोधन में कहा कि वसुधैव कुटुंबकम मंत्र से ही दुनिया समृद्ध होगी. वसुधैव कुटुंबकम का अर्थ कजाकिस्तान के कजाक लोगों को दुभाषिए ने समझाया होगा कि भारत सारी वसुधा या धरती को एक परिवार मानता है. हम अपने-पराये की भावना नहीं रखते. नवभारत परिवार की इस अमृतमयी पहल की अमृता ने सराहना की.' हमने कहा, 'आप महाराष्ट्र में रहते हैं तो जान लीजिए कि मराठी में माटी को माती कहते हैं. शाडू माती से गणेश प्रतिमा बनाई जाती है. मुलतानी माती फेसपैक का काम करती है. विदर्भ की काली माती में कपास और ज्वार की पैदावार होती है. ब्लैक एंड व्हाइट दूरदर्शन पर कृषि संबंधी प्रोग्राम दिखाया जाता था जिसका नाम था आमची माती, आमची माणसं ! इसका अर्थ था हमारी माटी, हमारे लोग.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12095 - डॉ. सागर खादीवाला

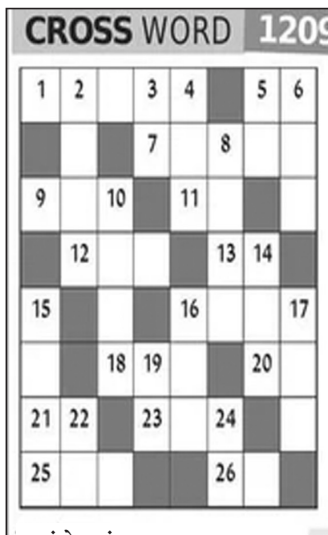

दूर हटाना (उर्दू)

उपर से नीचे

2. निराकरण, किसी का संदेह दूर करने वाली बात या काम 3. यश, जैसा 4. वायु, हवा 5. आघात, सप्ताह का दिन 6. कौटिल्य 8. कहने योग्य 10. जिसका आधा शरीर मानव का और आधा सिंह का हो 14. धोखा, भुलावा 15. सेना नायक 16. डंडे में चीथड़ा लपेटकर बनाई गई मोटी बस्ती जिसे हाथ में लेकर चलते हैं 17. सौ वर्ष की आयुवाला 19. मेघ, बादल, वर्षा 22. तोता, सुग्गा 24. देह की ऊंचाई - लंबाई (उर्दू)

बाएं से दाएं

1. दुविधा, संदेहास्पद स्थिति, पशोपेश (सं.) 5. वाणी, वचन 6. गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि जानी जाती है, समान करना (सं.) 9. नियम, कानून व्यवस्था 11. प्राचीन काल में घोड़ों द्वारा जोते जाने वाली दो या चार पहियों की गाड़ी 12. कोमलता, नम्रता 13. तुच्छ, अधम, निकृष्ट 16. शराब पीने वाला (उर्दू) 18. सदा, सदैव (उर्दू) 20. मां 21. मवेशी, चौपाया 23. कंठ, गले की नली (उर्दू) 25. वह जिसमें तीन कड़ियां हों 26. धारा,

Solution 12094

अं	ध	वि	श्वा	स			प
त	ड़	क		ती	र्थ	या	त्रा
	क	रा	र			च	चा
अ	न	ल		आ	य	क	र
नु			अ	भा	व		
प	सा	र	ना		नि	र्या	त
यु	ग		द	च	का		र
क्त		ग	र	ल		खें	नी

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनिश्चय की राजनीति का सामना करना होगा, व्यापार में विशेष परिश्रम करना होगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा, चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष प्रयत्न करने से कार्य बनेगा, वर्ष के मध्य में यात्रा होगी, कार्य क्षमता में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में अधिकारियों से मेलजोल रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को विशेष चिकित्सा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक अस्थिरता का सामना करना होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को अचानक धन लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सुखद यात्रा होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्थितियों से संयम सतर्कता रखना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, एकांतप्रिय होगा, शिक्षा अच्छी और उत्तम रहेगी, नौकरी में सफलता मिलेगी, जन्म स्थान से दूर भाग्योदय होगा, आय के एक से अधिक साधन उपलब्ध रहेंगे.

मेष- भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी, कारोबारी यात्रा का योग है, आय में वृद्धि होगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

वृषभ- व्यापारिक कार्यों में सम्हलकर फैसला लें, लाभ मिलेगा, स्थाई एवं अन्य साधनों में सफलता मिलेगी, विशिष्टजनों से संपर्क बढ़ेगा, शारीरिक पीड़ा हो सकती है.

मिथुन- पुरानी बातों को भूलकर काम पर ध्यान दें, सफलता मिलेगी, आजीविका के प्रयासों में सफलता, राजकीय सहयोग, कार्य की अधिकता रहेगी.

कर्क- रोजगार में इच्छित अवसरों की तलाश रहेगी, पारिवारिक आयोजन में शामिल होंगे, स्वास्थ्य लाभ होगा, धार्मिक कार्यों से मानसिक संतुष्टि रहेगी.

सिंह- राजकीय मामले सुलझेंगे, पूरे मनोयोग सेकाम करेंगे, खानपान की अनियमितता रहेगी, श्रम से अधिक कार्य करना होगा, सोचे हुये कार्यों में विलंब होगा.

कन्या- विपरीत माहौल में समझौता करना हितकर रहेगा, कर्ज से छुटकारा होगा, व्यवहार कुशलता एवं कर्मठता से कार्य पूर्ण होगा, निर्णय पक्षधर ही रहेगा.

तुला- दौड़धूप के अच्छे परिणाम मिलेंगे, धर्म कर्म में आस्था बढेगी, यात्रा सुखद और अच्छी रहेगी, विवादों का समाधान होगा, पारिवारिक कार्यों में रूचि रहेगी.

वृश्चिक- झूठ बोलकर मुश्किल में पड़ सकते हैं, वाणी में नियंत्रण रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, मित्र वर्ग आपके संबंधों से संतुष्ट रहेंगे.

धनु- पुराने झगड़े सुलझने के आसार हैं, प्रियजन से मुलाकात सुखमय रहेगी, निर्माण कार्यों में रूचि, संतान संबंधी सुखद समाचार प्राप्त होगा.

मकर- लेनदेन के मामले सुलझने का योग है, लंबी दूरी की यात्रा होगी, नवीन योजनाओं का विचार संभव है, व्ययभार अधिक रहेगा.

कुम्भ- पुरानी बातों भूलकर काम पर ध्यान दें, जिद छोड़कर कार्य करें, नवीन वस्त्राभूषण उपहार आदि की प्राप्ति होगी, अतिथि आगमन होगा.

मीन- सहकर्मी भ्रमित करने का प्रयास करेंगे, सहयोगी की कमी का अनुभव होगा, शारीरिक सुख मिलेगा, शुभ संदेश प्राप्त होने का योग है, यश मिलेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

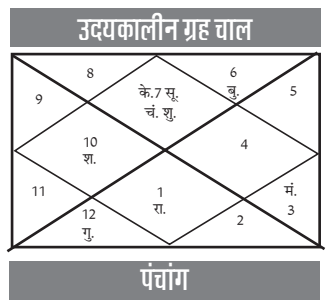

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल नवमीं शनिवासरे शाम 5/40, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रात 9/55, वज्र योगे रात 3/49, कौलव करणे सू.उ. 6/43, सू.अ. 5/17, चन्द्रचार कुम्भ शाम 4/3 से मीन, शु.रा. 11, 1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष शुक्ल नवमीं को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, तिल, तेल, मोठ, के भाव में मंदी होगी, सरसों, अरंड़ी, गुड़ शक्कर के भाव में घट-बढ़ रहेगी, आज 11 बजकर 10 मिनिट से 15 मिनिट के रूख पर व्यापार करना लाभकारी रहेगा, भाग्यांक 7033 है.

SUDOKU 7227

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7226

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3